International Research Journal of Commerce and Law
Volume 06 Issue 01, January 2019 ISSN: 2349-705X Impact Factor: 4.616
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

भारत सरकार का आत्मनिर्भर अभियान के द्वारा कृ ी क्षेत्र की विकास की संभावना

डॉ. गोपाल रामकृष्ण तडस
प्राचार्य
श्री. आर. आर. लाहोटी विज्ञान महाविद्यालय, मोर्शी जिल्हा अमरावती.

प्रस्तावना :

भारत कृ ी प्रधान देश है। भारत स्वतंत्रता के समय, देश की अर्थव्यवस्था मे भारत की आबादी का ८० टक्के हिस्सा और कृ ी क्षेत्र का ५० टक्के हिस्सा था। भारत सरकार की औद्योगिक निति और बदलते समय के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था मे कृ ी के प्रभुत्व में लगातार गिरावट होने के बावजूद, आज भी, ग्रामीण क्षेत्र की जनता आज भी रोजगार उपलब्धी के लिए इसी क्षेत्र पर निर्भर है। भारत की कृ ि अर्थव्यवस्था को अभी भी भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ के रूप में जाना जाता है। यद्यपि औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों मे भारतीय अर्थव्यवस्था का ८० टक्के से अधिक हिस्सा है, लेकीन भारतीय जनसंख्या की, केवल ४० टक्के आबादी इन दो क्षेत्रों पर अवलंबित है। इससे अधिक की जनसंख्या कृ ि पर निर्भर है। इसी समय, औद्योगिक क्षेत्र में कच्चे माल की आपूर्ती की जिम्मेदारी कृ ि अर्थव्यवस्था के साथ टिकी हुई है। कृ ि के बाद, कपडा उद्योग को भारत में दूसरा सबसे बडा नियोक्ता माना जाता है। इस उद्योग के लिए आवश्यक कपास की आपूर्ती कृ ि क्षेत्र से की जाती है। यदि प्राकृतिक आपदा या किसी अन्य कारण से कृ ि उद्योग संकट में है, तो इसका असर औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों पर भी पडता है।

समिक्षा का उद्देश

- भारतीय कृ ि क्षेत्र की, मुलभूत समस्या का अध्ययन करना।
- भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहद कृ ि क्षेत्र की विकास के लिए ले गए निर्णयों की समीक्षा करना।
- भारत सरकार के निर्णय के कारण कृ ि अर्थव्यवस्था में हो रहे परिवर्तनों का एक अध्ययन करना।

कृ ि क्षेत्र की, मुल समस्याए ।

देश के ग्रामीण क्षेत्रों की लगभग ५८ टक्के आबादी खेती पर निर्भर है। खेती करना सबसे अच्छा कार्य माना जाता है। लेकिन आज हम अपने देश की हालत पर नजर डालें तो आजीविका के लिए निश्चित रूप से खेती सबसे अच्छा कार्य नहीं रह गया है। हर दिन देश में लगभग २००० किसान खेती छोड देते है और बहुत सारे किसान ऐसे है जो खेती छोड देना चाहते है। देश में पिछले कई साल से हर साल हजारों किसान निराश होकर आत्महत्या जैसा कदम उठाने को मजबूर हो गए

है। पिछले कई साल से ग्रामीन क्षेत्रों में खेती मौजूदा स्थिति को लेकर एक खतरनाक आक्रोश पनप रहा है। कभी छत्तीसगढ के किसान सडक पर टमाटर फेंक देते है तो कभी कर्नाटक व देश के कई हिस्सों में किसान प्याज सडको पर फेंकने पर मजबूर हो जाते है। हरियाणा से किसान को आलू ९ पैसे प्रति किलो बिकने की खबर आती है। तो महारा ट्र व मध्यप्रदेश में फल सब्जिया व दूध सडकों पर बहाकर किसान आंदोलन करते है। आज हमारे देश में एक भी प्रदेश ऐसा नहीं है जहां से किसान की दुर्दशा की खबरे न आती हों। खेती किसानी की इस दुर्दशा के मूल कारणों की पडताड करना जरूरी है। आखिर क्या वजह कि आज का किसान की स्थिति चक्रव्यूह में फंसे अभिमन्यु जैसी नजर आ रही है। किसान की समस्या निरीक्षण करते समय निम्मलिखीत समस्या महत्वपूर्ण है।

लागत खर्च की बढोतरी

पहिले किसान घरके ही बीज और घर के ही खाद इस्तेमाल करते थे। इसकी वजह से लागत खर्च कम था। अभी जादा पैदावार के लिए संशोधित बीज, पेस्टिसाइड आदि पे होनेवाले खर्चे बढ गये है। उच्च गुणवत्तायुक्त बीज सही दामों में किसान को उपलब्ध हो पाना एक बडी चुनौति रहती है। महंगे बिकने वाले पेस्टिसाइड से कीटों पर नियंत्रण होता है, फसलों की उत्पादकता बढ जाती है। पर जैविक या प्राकृतिक खेती की अपेक्षा से रासायनिक खेती पर होनेवाला किसान का खर्चा बढाने के कारण उत्पाद की बढोतरी होने की बावजूद किसान को मिलनेवाला आर्थिक लाभ मे घट हुई है।

बढता कर्ज का जाल

खेती का लागत खर्चा बढने के कारन किसान पर कर्जे का बोझा बढ गया है। एक बार किसान कर्ज के चंगुल में फंसता है तो फिर बाहर निकलना बहुत मुश्किल हो जाता है। विशे ाकर वे किसान जो साहूकारों से बहुत ही उची ब्याज दर (३६ टक्के – १२० टक्के प्रति व ा) पर ब्याज लेते है। किसानों की आत्महत्या में ना चुकाया जाने वाला बैंको व साहूकारों का कर्ज एक बहुत महत्वपूर्ण कारण बनता है। कृ ा क्षेत्रों में नए निवेश में कमी हुई है। कृ ा में निवेश करना अन्य वेंचरों मे निवेश की तुलना में कम लाभदायक होता है। अन्य क्षेत्रों में निवेश कृ ा की बजाय उच्च रिटर्न देने वाले सिद्ध होते है। परिणाम स्वरूप कृ ा में निवेश में कमी हुई है और इस क्षेत्र का नुकसान हुआ है।

मानसून पर निर्भरता

भारत में अधिकांश कृ ाक्षेत्र असिंचित होने के कारण कृ ा क्षेत्र में समग्र विकास के लिए मानसून महत्वपूर्ण है। बीज बोने का पैटर्न इमेशा उस क्षेत्र के मान्सून पर निर्धारित होता है। नैसर्गिक बदलाव के कारन खराब मौसम के कारण खेती पर बहुत बुरा असर पडता है और किसानों को बहुत भारी नुकसान उठाना पडता है। ऐसी ही स्थिती खरीप फसलों के उत्पादन

और उपज में भी उत्पन्न होती है। बे मौसम बारिश, ओला वृ ट, बाढ, सूखा, चक्रवात आदि से फसलों के नुकसान की स्थिती में किसानो को तत्काल व समुचित राहत पहुंचाने में हमारे देश का तंत्र व व्यवस्था प्रभावी साबित नहीं हो पाई है।

फसल के दाम भारी अनिश्चितता

पिछले कई सालों से खेती करने की लागत जिस तेजी से बढती जा रही है। उस अनुपात में किसानों को मिलने वाले फसलों के दाम बहुत की कम बढें है । सरकार की हरसंभव कोशिश रहती है की फसलों के दाम कम से कम रहें, जिससे मंहगाई काबू में रहे। लेकिन सरकार उसी अनुपात में फसलों को उपजाने में आने वाली लागत को कम नहीं कर पाती। इससे किसान बीच में पिस जाता है और देश की जनता को सस्ते में खाना उपलब्ध कराने की सारी जिम्मेदारी एक किसान के कंधो पर डाल दी जाती है। इसका परिणाम हम सब किसान पर कभी ना खत्म होने वाले बढते कर्जे के रूप में देखते है।

फसलों के मूल्य निर्धारण के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य का प्रावधान है पर कई बार खुद सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य ही किसान की लागत से भी कम घो ित किया जाता है। इसको कर्नाटक के एक उदाहरण से समझा जा सकता है। जहां कर्नाटक एग्रीकल्चर प्राईस कमीशन द्वारा २०१४–१५ की मुख्य फसलों में अध्ययन में ये सामने आया कि लगभग हर फसल का घो ित न्यूनतम समर्थन मूल्य फसल की लागत से भी कम था और किसानो को लगभग हर फसल में नुकसान उठाना पडा। हमने यहा भारतीय कृ ा से जुडी लगभग सभी समस्याओं का विश्ले ाण किया है।

फसल	केंद्र सरकार द्वारा घो ितन्यूनतम समर्थन मूल्य २०१५–१६ (रूपये/क्विंटल)	उत्पादन लागत (रूपये/क्विंटल)	प्रति एकड लाभ
धान	१,४५०	१,६७१	–३,७६८
रागी	१,६५०	२,७८१	–१४,३८०
सफेद ज्वार	१,५९०	२,९२२	–३,२६०
मक्का	१,३२५	१,४२५	–३,८४२
बाजरा	१,२७५	२,३२४	–६,९३६
बंगाली चना	३,५००	४,९६३	–५,६२१
मुंगफली	४,०३०	६,१८६	–८,१९६
सूरजमुखी	३,८००	४,४१६	–५,२१४
सोयाबिन	२,६००	३,६४७	–३,२०८
टमाटर	समर्थन मुल्य नही	१,०८९	–४८,७२३
प्याज	समर्थन मूल्य नही	१,०२१	१७,४१७
आलू	समर्थन मूल्य नही	१,९०६	–२७,९६०
कपास	३,८००	४,५२८	–५,६८४

स्त्रोत : कर्नाटक एग्रीकल्चर प्राईस कमीशन

इसका सीधा सीधा मतलब ये हुआ कि आज एक किसान हमारी प्लेट में आने वाले खाने को सब्सिडी दे रहा है, जिससें की मुझे और आपको सस्ता खाना उपलब्ध हो पा रहा है। इससे सरकारों का महंगाई को नियंत्रण में रखने का उद्देश पूरा हो जाता है। कृ ा विशे ज्ञ देविंदर ार्मा के अनुसार देश में सिर्फ ६ टक्के के करीब किसान ही न्यूनतम समर्थन मूल्य का लाभ ले पाते और बाकी के ९४ टक्के किसान बिना किसी न्यूनतम समर्थन मूल्य के ही फसल उत्पाद बेचते है। किसान की स्थिती ये है कि अगर खराब उत्पादन होता है तो भी किसान का नुकसान होता है। अगर ज्यादा उत्पादन हो जाता है तो फसलों के दाम गिर जाते है और तब भी किसान घाटे में रहता है।

भारत सरकार की आत्मनिर्भर भारत कृ ा योजना

कोरोना के कारण भारत मे मंदी की अवस्था निर्माण हुई। इस अवस्थामें फसी इुई स्थिती को बाहर निकालने के लिए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदीने आत्मनिर्भर भारत योजना की घो ाणा की। इस योजना के तहद तीसरे चरण में, कृ ा क्षेत्र के लिए १.५ लाख करोड रूपये के पैकेज की घो ाणा की गई। इन घो ाणाओं से ग्रामीण अर्थव्यवस्था, किसानों, मछुआरों और डेअरी क्षेत्र के लोगों को लाभ होगा। इसमें निम्नलिखित योजनांए ाामिल है।

कृ ा क्षेत्र में आधारभूत संरचना

- कृ ा अवसंरचना के लिए १ लाख करोड रूपये प्रदान करने घो ाणा की है। इसे कृ ा उत्पाद के लिए कोल्ड चेन, पोस्ट फसल प्रबंधन की सुविधा होगी। इससे किसान के कृ ा उत्पाद को तत्काल बाजार मिलेगा। कोरोना अवधि के दौरान लॉकडाउन के कारण परिवहन बंद था। केवल किसानों को कृ ा उपज का परिवहन करने की अनुमती थी। परिणामस्वरूप, किसानों की आय का प्रवाह जारी रहा।
- बिहार मे मखाना, उत्तर प्रदेश के आम, जम्मु और कश्मिर के केसर, पूर्वोत्तर के बांस, आंध्र प्रदेश की मिर्च आदि के लिए क्लस्टर आधारित निती की घो ाणा की गई है। इस उत्पाद की वैश्विक मांग के कारण, यह योजना किसानों को अपनी उपज सीधे आंतरररा ट्रीय स्तर पर ले जाने का अवसर प्रदान करेगी।
- फलो और सब्जीयों के परिवहन के लिए ५० टक्के अनुदान दिया जाएगा। कोल्ड स्टोरेज सहित अन्य गोदामों के लिए लिए ५० टक्के अनुदान। यह एक पायलट प्रोजेक्ट है।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग

कृ ा उत्पाद सब्जिंया, फल, मछली और दूध जैसे उत्पाद अल्पकालिक है। इसलिए भारत सरकार ने इस योजना के तहत इस उत्पाद को संसाधित करने के लिए एक विशे ा योजना की घो णा की है। माक्रो फुड एंटरप्राइजेस के लिए १०,००० करोड रूपये की फंड स्कीम है, जो क्लस्टर आधारित होगी। रात भर में २ लाख खाद्य प्रसंस्करण को फायदा होगा। इस योजना से न केवल किसान बल्कि अन्य लोग भी लाभान्वित होगें। इसमें निम्नलिखीत कृ ा उत्पादों पर आधारित निम्नलिखित उद्योग ामिल है।

मत्स्य उद्योग

भारत सरकार ने मत्स्य सम्पदा योजना लागू कर दिया गया है और इस योजना सें ५० लाख लोंगो को रोजगार देने और भारत सरकार के निर्यात को बढावा देने की उम्मीद है। मछली पालन को बढाने के लिए मछुआरों को जहाज और नसव बीमा दिया जाएगा। इसे उम्मीद है कि आनेवाले ५ व ों में ७ मिलियन टन अतिरिक्त मछली का उत्पादन होगा। मछली पकडने के बंदरगाह, कोल्ड चेन, बाजार आदि जैसी बुनियादी सुविधाओं के लिए ९००० करोड रू. खर्च करने भारत सरकारने योजना जारी की है। इस योजनासे ५५ लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा।

पशुधन क्षेत्र के लिए योजना

पशुपालन कृ ा आधारित माध्यमिक और कृ ा अनुपूरक उद्योग है। किसान पशुधन रखते है लेकिन, उपचार के अभाव में, कई पशुधन मर जाते है। जानवरों को कई जानवरों की बिमारीयों का टीकाकरण नहीं मिलता है। राम के कारण किसान पीडित है। सभी जानवरों को टीका लगाने के निर्णय की घो णा की गई है। टीकाकरण पर १३,३४३ करोड रूपये खर्च होंगे। रात भर में ५३ करोड पशुधन को बिमारी से छुटकारा मिल जाएगा। पशुपालन के बुनियादि ढांचे के विकास के लिए १५,००० करोड रू. का को ा उपलब्ध कराया जाएगा। पशुपालन सुविधा विकास को ा का गठन किया जाएगा। इसके माध्यम से डेअरी प्रसंस्करण, प्रजनन और पशु आहार संबंधी सुविधाओं में निजी निवेश को बढाया जाएगा। साथ ही, निरत परियोजना के लिए एक प्रोत्साहन राशि दी जाएगी।

हर्बल खेती योजना

आयुर्वेद दुनिया के लिए भारत का उपहार है। भारत सरकार ने हर्बल खेती के लिए एक विशे ा योजना के तहद अगले दो व ों में १० लाख हेक्टर भूमि पर हर्बल खेती की जाएगी। अनुमान है कि किसान हर्बल खेती से ५,००० करोड रूपये कमाएंगे। कोरोना अवधि के दौरान दुनिया भर में आयुर्वेद की मांग बढी है। इससे भारतीय जडी बुटियों की मांग बढ गई है। भारत सरकार की योजना है कि १० लाख हेक्टर के औ ाधीय पौधों में औ ाधीय पौधे लगाए जाएं ताकि किसान

पारंपारिक उत्पादों के साथ–साथ हर्बल उत्पाद भी ले सकें। वन जडी बूटियों के उत्पादन को बढाने के लिए ४,००० करोड रूपये का निवेश करने का निर्णय लिया गया है और रा ट्रीय हर्बल वन बोर्ड की मदत से २.२५ लाख हेक्टर भूमि पर वनीकरण किया जाएगा।

मधुमक्खी पालन उद्योग

मधुमक्खी पालन कृ ा के लिए पूरक उद्योग है। भारत सरकार ने २ लाख मधुमक्खी पालकों के लिए ५०० करोड रूपये की दैनिक मजदूरी की घो णा की है। इससे किसानों की आय बढेगी और ाहद का उत्पाद भी बढेगा।

ऑपरेशन ग्रीन

भारत सरकारने ५०० करोड रूपये की लागत से ऑपरेशन ग्रीन के तहत भारत सरकार द्वारा प्रतिदिन टमाटर, आलु, प्याज और अन्य सब्जियों का उत्पादन किया जाएगा। कोरोना द्वारा क्षतिग्रस्त टमाटर, प्याज, आलू, फल, दालों और खराब कृ ा वस्तुओं की आपूर्ती श्रृंखला सहायता प्राप्त होगी और 'ग्रीन ग्रोइंग अभियान' (ऑपरेशन ग्रीन्स) अगले छह महीनों के लिए पायलट आधार पर आयोजित किया जाएगा। इसके लिए ५० फीसदी सब्सिडी ट्रांसपोर्टेशन के लिए दी जाएगी ५० फिसदी स्टोरेज के लिए।

कृ ा निवेश और उत्पादकी बिक्री

कृ ा क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा और निवेश को बढाने के लिए १९५५ के कमोडिटी अधिनियम में संशोधन करने का निर्णय लिया गया है। जिससे के तहत अनाज, खाद्य तेल, तिलहन, दालें, आलू और प्याज को अधिनियम से छूट दी जाएगी। केवल एक जिससे किसानों को अपनी उपज को अपने मूल्यों पर बेचने में मदत मिल सके, जिससे ई–ट्रेडिंग की सुविधा मिल सके। किसानों को अपनी उपज को आक ाक किमतों पर दूसरे राज्यों में बेचने की इजाजत मिलेगी। साथ ही, कृ ा उत्पादों के ई–ट्रेडिंग की संरचना को सुव्यवस्थित किया जाएगा और इससे किसान एपीएमसी के अनुसार अपनी उपज को लाइसेंसधारियों को बेच सकेंगे। इससे किसानो की आय बढने की उम्मीद है।

नि क ा

आज, भारत की अकुशल क्षेत्र को सबसे जादा रोजगार देनेवाला कृ ा क्षेत्र समस्याओसे घेरा है। कृ ा क्षेत्र की सभी समस्या एकही दिन मे निर्माण हुई नही है की जे एकही दिनमे समाप्त हो जायंगे और किसानो की आय दुगुनी हो जायेगी। केवल सरकार ही इस समस्या पर इलाज नही कर सकती। किसानोने भी अपनी समस्यामे बदलाव लाने के दृ टसे

खूद का रास्ता खोजना चाहिए। पचास सालमें कृ ा क्षेत्र छोडकर सभी क्षेत्रो का आधुनिकीकरण हुआ है। लेकिन कृ ी क्षेत्रमे आज भी परंपरागत तरीके से की जाती है। इस क्षेत्र मे मेहनत जादा और मुनाफा कम होने की वजहसे शिक्षित युवा इस क्षेत्र मे अपना करिअर बनाने के लिए तयार नही है। इस कारण आधुनिकीकरण वेग कृ ा क्षेत्र मे सबसे कमी है। भारत सरकारने आनेवाले २०२४ तक किसानो की आय दुगूनी करने का निर्णय लिया है। भारत कृ ा क्षेत्र में समस्याएं कभी खत्म नहीं होती है। ये सभी समस्याएं एक दिन में नही बनती है, वे एक दिन में दूर हो जाएंगी। भारत सरकार द्वारा घो ात आत्मनिर्भर भारत योजना के तहत, कृ ा क्षेत्र को एक बेहतर दिशा मिल रही है। इसके अलावा, आवश्यक वस्तु अधिनियम में संशोधन ने किसानों को भारत में और अपनी इच्छा से कहीं भी अपनी उपज बेचने का अधिकार दिया है। इसके अलावा, अगर समझौते का अनुपालन नहीं किया जाता है, तो किसान को न्याय मांगने का अधिकार है। भारत सरकारने आत्मनिर्भर भारत योजना के तहत घो ात की हुई योजनासे किसानों की आय में वृद्धि होनेकी संभावना है। लेकिन इस योजना का लाभ सभी किसानोने लेना चाहिए।

संदर्भ सूची

१. भारतीय अर्थव्यवस्था – लेखक रमेशसिंग (हिंदी आवृत्ती)
२. झामरे, डॉ. जी.एन – भारतीय अर्थव्यवस्था, पिंपळापूरे प्रकाशन, नागपूर. पहिली आवृत्ती २०१६.
३. भारतीय अर्थव्यवस्था – लेखक देसाई आणि निर्मल भालेराव प्रगती प्रकाशन, पुणे.
४. भोसले व काटे – जागतिक अर्थव्यवस्था, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर आवृत्ती २०००.
५. झामरे, डॉ. जी.एन. – भारतीय अर्थव्यवस्था विकास व पर्यावरणात्मक अर्थशास्त्र.
६. वृत्तपत्रातील लेख आणि वेबसाईटवरील लेख.